MAKTABATUL MADINA INDIA

Sukoon Bakhsh Aayaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 446
Weekly Booklet : 446

सुकून बख़्श आयतें

सफ़हात : 20

पहले इसे पढ़ियें

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन का कलामे पाक इस क़दर दिल नशीन और रूह़ परवर है कि अगर कोई मह़ब्बत व अदब का दामन थामे, दिल जमई और यक्सूई के साथ क़ुरआने करीम की तिलावत करते हुए उस के तर्जमे पर ग़ौर करे तो अल्लाह पाक की रह़मत से उस के दिल को बेह़द सुकून, चैन और क़रार नसीब होता है। कलामे पाक में ऐसी राह़त है जैसी दुनिया की किसी शै में नहीं, हमारा प्यारा प्यारा रब ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : मेरी याद में **"दिलों का चैन"** है। इस मुख़्तसर रिसाले में चन्द ऐसी आयाते मुबारका पेश की गई हैं जो अपने माना व मफ़्हूम के एतिबार से बड़ी वाज़ेह़ और दिलों को छू लेने वाली हैं। इन आयाते करीमा में बिल ख़ुसूस ग़मज़दा दिलों के लिये तसल्ली, बे क़रारों के लिये क़रार, परेशान ह़ालों के लिये चैनो सुकून और ग़मो अलम के मारों के लिये राह़तो शादमानी का सामान है। शर्त़ येह है कि इत़मीनाने क़ल्ब के साथ पुर सुकून माह़ौल में इन आयाते मुबारका और इन के तर्जमे को ज़ेहनो दिमाग़ में दोहराएं और ग़ौर करें कि अल्लाह पाक अपने बन्दों से किस क़दर मह़ब्बत और अपनाइयत का इज़्हार फ़रमा रहा है, इसी से मिलते जुलते मौज़ूआ़त की आयात का इन्तिख़ाब अ़र्से से जारी था। मुफ़्तिये अहले सुन्नत मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी مُدَّظِلُّہُ العالی का इस त़रह़ का एक वीडियो क्लिप देखा तो ज़ेहन बना कि अब इस काम को मन्ज़रे आ़म पर लाया जाए। अल्लाह पाक की तौफ़ीक़ से फ़िलह़ाल चन्द आयाते मुबारका पर मुश्तमिल येह रिसाला पेश किया जा रहा है, اِن شاءَاللہ الکریم येह सिल्सिला जारी रहेगा। अल्लाह पाक इसे सारी उम्मत के लिये फ़ायदेमन्द बनाए और मेरी, मेरे वालिदैन, असातिज़ए किराम और पीरो मुर्शिद की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ बनाए।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِیَ عنہ

12 शाबान शरीफ़ 1447. 01 फ़रवरी 2026

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुकून बख़्श आयतें

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला "सुकून बख़्श आयतें" पढ़ या सुन ले उस की ज़िन्दगी सुकून और ख़ुशियों से भर दे और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "जिस मुसलमान के पास सदक़ा करने को कुछ न हो उसे चाहिये कि अपनी दुआ में येह कह लिया करे : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ۔ तो येह ज़कात (यानी सदक़ा) है और मोमिन कभी भलाई से सैर नहीं होता यहां तक कि जन्नत उस का ठिकाना होती है।" (ابنِ حبان، 2/130، حدیث:900)

शर्हे ह़दीस : जो शख़्स सदक़ा करने पर क़ुदरत नहीं रखता उस का रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये अल्लाह पाक से रह़मत की दुआ करना (यानी दुरूदे पाक भेजना) उस के लिये सदक़ा है। (السراج المنیر بشرح جامع الصغیر، 2/232 ماخوذاً)

ऐ मदीने के ताजदार सलाम ऐ ग़रीबों के ग़म गुसार सलाम
तेरी इक इक अदा पे ऐ प्यारे सौ दुरूदें फ़िदा हज़ार सलाम

(ज़ौक़े नात, स. 170)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ाफ़िज़ों पर तअ़ज्जुब है

ह़ज़रते अबुल ह़सन अह़मद बिन अबू ह़वारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बड़े इ़बादत

गुज़ार, दुनिया से बे रग़बत बुज़ुर्ग थे, आप फ़रमाते हैं : मैं ने क़ुरआने करीम की तिलावत की और उस की एक एक आयते मुबारका में ग़ौर किया तो मेरी अ़क़्ल ह़ैरान रह गई और मुझे क़ुरआने करीम के ह़ाफ़िज़ों पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि वोह कैसे सोते हैं, कैसे चलते फिरते हैं और दुनिया के किसी काम में कैसे मश्ग़ूल हो जाते हैं जब कि वोह अल्लाह पाक के कलामे पाक की तिलावत करते हैं। जो वोह तिलावत करते हैं अगर उसे समझते, उस के ह़क़ को पहचानते, उस से लज़्ज़त ह़ासिल करते और उस के ज़रीए से मुनाजात (यानी बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआएं) करते तो ख़ुशी में उन की नींदें उड़ जातीं कि हमें कैसी दौलत अ़ता हुई और कैसे अ़मल की तौफ़ीक़ दी गई है। (حلیۃ الاولیاء، 10/21، رقم:14354)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

मेरे रब का कलाम है क़ुरआं वाह क्या बात प्यारे क़ुरआं की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ अ़ाशिक़ाने क़ुरआन ! अल्लाह पाक ने अपने सब से प्यारे प्यारे और आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपनी सब से अफ़्ज़ल किताब "**क़ुरआने करीम**" नाज़िल फ़रमाई, येह वोह अ़ज़मत, बरकत और रह़मत वाली किताब है कि इस में हर शै का बयान मौजूद है, इस कलामे पाक में ग़ैब की ख़बरें, दुनिया व आख़िरत बेहतर बनाने के त़रीक़े और मोमिनों के लिये बड़ी बड़ी ख़ुशख़बरियां हैं। ऐ काश ! रोज़ाना तिलावते क़ुरआने करीम करना हमारा मामूल बन जाए और हमें भी कलामे पाक की ह़क़ीक़ी लज़्ज़त नसीब हो जाए। आमीन

20 मरतबा दोहराया

सहाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में दौराने सफ़र एक रात गुज़ारी तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ी, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोए यहां तक कि ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए, फिर 20 मरतबा "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ी, हर बार जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ते तो रोते यहां तक कि ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते, फिर इरशाद फ़रमाया : जिस पर रह़मान व रह़ीम रह़म न फ़रमाए ज़रूर वोह शख़्स नुक़्सान उठाने वालों में से है। (اخلاق النبی للاصبہانی، ص 111، حدیث: 551)

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करने के लिये इसे दोहराया क्यूंकि येह क़ुरआने करीम के सारे राज़ों को शामिल है। (اتحاف السادۃ، 5/89)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साह़िबे क़ुरआन हैं और आप को क़ुरआने करीम के तमाम राज़ों का इ़ल्म है, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कलामे पाक के ह़क़ीक़ी माना व मफ़्हूम को समझते थे, उम्मत की तालीम व इस्लाह़ के लिये इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त अह़ादीसे मुबारका में बयान हुए हैं।

लज़्ज़ते क़ुरआन से बे इख़्तियार रोते

तमाम मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को अपने आंसुओं पर इख़्तियार न रहता (यानी ज़ारो क़त़ार रोने लग जाते)।

(شعب الایمان، 1/493، حدیث: 806)

कलामुल्लाह की लज़्ज़त

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि हीरे की क़द्र जौहरी (यानी हीरे की पहचान रखने वाला) ही जान सकता है, इसी त़रह़ अल्लाह पाक के कलामे पाक क़ुरआने करीम में ग़ौरो फ़िक्र करना हर किसी के बस की बात नहीं बल्कि येह सिर्फ़ उ़लमाए किराम کَثَّرَھُمُ اللہ (यानी अल्लाह पाक उन की तादाद बढ़ाए) ही कर सकते हैं क्यूंकि उन के पास ग़ौरो फ़िक्र वाली सोच, अ़क़्ल और समझ होती है, अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से अगर हमें भी क़ुरआने करीम की तिलावत और उस के मआ़नी व मफ़ाहीम की ह़क़ीक़ी मारिफ़त (यानी पहचान) नसीब हो जाए तो इस कलामे पाक में ऐसी लज़्ज़त है जैसी दुनिया की किसी शै में नहीं बल्कि दिल करे बस तिलावते क़ुरआने करीम ही करते रहें, मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ के बारे में है कि आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ क़ुरआने करीम की इतनी ज़ियादा तिलावत करते थे कि क़ुरआने करीम का नुस्ख़ा (कसरते इस्तिमाल) से शहीद हो गया।(البدایہ والنہایہ، 5/307) आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "अगर तुम्हारे दिल पाक होते तो क़ुरआने करीम से कभी सैर न होते और मुझे कोई भी दिन या रात क़ुरआने मजीद की तिलावत किये बग़ैर गुज़ारना पसन्द नहीं।" (حلیۃ الاولیاء، 7/350، رقم:10813)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

سُبْحٰنَ اللہ ! काश ! जामेउ़ल क़ुरआन, मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ عَنْہ के सदक़े हमें भी तिलावते क़ुरआन का शौक़ो ज़ौक़ नसीब हो जाए। काश ! हमें भी ह़क़ीक़ी लज़्ज़ते क़ुरआन और रूह़ानी सुकून ह़ासिल हो जाए।

तुम्हीं को जामेए क़ुरआन का ह़क़ ने दिया मन्सब अ़ता क़ुरआं को कर के जमा की उम्मत को आसानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

कानों में उंगलियां डाल लेते

रिवायत में है कि अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام जब कोहे त़ूर पर अल्लाह पाक से हम कलाम हो कर वापस लोगों में तशरीफ़ लाते तो (अल्लाह पाक से हम कलामी से मिलने वाली लज़्ज़त के सबब) लोगों की बातें सुनने से वह़शत फ़रमाते और अपने मुबारक कानों में उंगलियां डाल लेते। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 44)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ के ऐसे बे शुमार वाक़िआ़त किताबों में मौजूद हैं, जिन में वोह सारी सारी रात कलामुल्लाह की लज़्ज़त से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते और उस लज़्ज़त में ऐसा ज़ौक़ पाते कि उन्हें त़वील रातों के गुज़र जाने का पता तक न चलता।

एक त़रफ़ इन ह़ज़राते क़ुद्सिय्या की पाकीज़ा कैफ़िय्यात थीं और एक हम हैं, अव्वल तो हम गुनहगारों को क़ुरआने करीम की तिलावत की सआ़दत कम ही नसीब होती है अगर तौफ़ीक़ मिल जाए तो दिल करता है कि जल्दी जल्दी ख़त्मे क़ुरआन हो जाए। बारहा ज़बान से क़ुरआने करीम पढ़ रहे होते हैं लेकिन दिल दुनिया के ख़यालात और ज़ेहन नित नए तसव्वुरात में मश़ग़ूल होता है। बे तवज्जोही और बे दिली के साथ अल्लाह पाक के कलाम की तिलावत करने वालों के बारे में एक इ़ब्रतनाक रिवायत पढ़िये और इ़ब्रत का सामान कीजिये :

ऐ बन्दए ख़ुदा सोच ज़रा !

ह़ज़रते शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने तौरात में अल्लाह पाक का येह फ़रमान पढ़ा, अल्लाह पाक बन्दे से इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे ! क्या तुझे मुझ से ह़या नहीं आती ? अगर तू पैदल चल रहा हो और तेरे पास

किसी दोस्त या भाई का ख़त आ जाए तो तू उसे पढ़ने के लिये रास्ते से हट कर बैठ जाता है, फिर उस के एक एक हर्फ़ को बग़ौर पढ़ता है कि कहीं कोई शै रह न जाए और येह मेरी किताब है, मैं ने उसे तेरी तरफ़ नाज़िल किया है, ज़रा देख तो सही ! मैं ने तुझे इस किताब में कितने अहकाम अता किये हैं और उन्हें बार बार ज़िक्र किया है ताकि तू इन में ग़ौरो फ़िक्र करे ? फिर भी तू एराज़ किये (यानी मुंह मोड़े) हुए है। क्या मेरी हैसिय्यत तेरे नज़दीक अपने उन भाइयों से भी कम है ? ऐ मेरे बन्दे ! जब तेरा कोई भाई तेरे पास बैठता है तो तू उस की जानिब मुकम्मल तौर पर मुतवज्जेह हो जाता है और उस की बात दिल से सुनता है कि अगर कोई शख़्स तुझ से बात करे या किसी दूसरे काम में मश्ग़ूल करने की कोशिश करे तो उसे इशारे से चुप करा देता है और इधर मैं तुझ पर नज़रे रहमत फ़रमाता हूं और तुझ से ख़िताब करता हूं लेकिन तू है कि मुझ से अपने दिल को मोड़े हुए है, पस तू ने मुझे अपने भाई से भी कम मरतबा समझ रखा है।"

(قوت القلوب، 1/109)

मुबारक किताब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तिलावते क़ुरआने करीम दिल जमई, ख़ुश दिली और आजिज़ी व इन्किसार के साथ कीजिये और साथ में तर्जमए कन्ज़ुल ईमान या आसान तर्जमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान पेशे नज़र हो तो बाज़ आयाते मुबारका माना के एतिबार से इस क़द्र आम फ़हम (यानी जल्द समझ आने वाली) होती हैं कि बन्दा थोड़ी देर ठहर कर ग़ौर करे तो उसे समझ आ जाएगा कि "**मेरा करीम रब मुझ से क्या फ़रमा रहा है**", इसी तरह बाज़ आयाते मुबारका इस क़दर दिल को राहत और सुकून पहुंचाने वाली बिशारतों (यानी ख़ुशख़बरियों) पर मुश्तमिल होती हैं कि अगर ग़ौरो फ़िक्र करें तो रहमते ख़ुदावन्दी से आंखों से आंसू जारी हो जाएं कि कहां मैं ग़ाफ़िल और सुस्त बन्दा और कहां मेरा रहीमो करीम

परवरदिगार। तिलावत करते हुए रोने की कोशिश करनी चाहिये कि ह़दीसे पाक में है : बेशक येह क़ुरआन ह़ुज़्न के साथ उतरा है, इस लिये जब तुम इसे पढ़ो तो रोओ और अगर रो न सको तो रोने जैसी शक्ल बनाओ। (ابنِ ماجہ، 2/291، حدیث:3731)

ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करने का त़रीक़ा

तिलावते क़ुरआने करीम के वक़्त दिल में ग़म पैदा करने का त़रीक़ा येह है कि बन्दा क़ुरआने करीम में मौजूद नसीह़तों, डराने वाली बातों और वादों को याद करे, फिर अल्लाह पाक के अह़काम और मना की हुई बातों के बारे में अपनी कोताहियों पर ग़ौर करे तो यक़ीनन उस के दिल में ग़म पैदा होगा और आंखों से आंसू निकल आएंगे। और अगर न ग़म हो और न आंसू आएं जैसा कि साफ़ दिल वालों के दिल रो पड़ते हैं तो फिर उसे न रोने और ग़मगीन न होने पर रोना चाहिये क्यूंकि येह (यानी दिल की सख़्ती) सब से बड़ी मुसीबत है। (احیاء العلوم، 1/368)

कभी इस त़रह़ भी कीजिये

अल्लाह पाक के कलाम की तिलावत के वक़्त ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब का ख़याल रखते हुए ग़ौरो फ़िक्र करें कि तिलावते क़ुरआन से येही मक़्सूद है, क़ुरआने करीम में कितनी आयाते मुबारका में ग़मज़दों के लिये राह़तों का बयान है कितनी आयाते मुबारका में बे सहारों के लिये आसरा है। ज़रा ग़ौर कीजिये कि अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ने मेरी ज़ात में अपनी कितनी नेमतें रखी हैं, रब्बे करीम ने इस दुनिया में मेरे लिये कितनी आसाइशें पैदा फ़रमाई हैं, अगर मैं अपनी इस मुख़्तसर ज़िन्दगी को उस की रिज़ा के मुताबिक़ गुज़ारूं तो मेरे लिये क़ब्रो ह़श्र में ऐसी ऐशो इ़शरत का सामान होगा जिसे न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना। मेरे रब्बे करीम ने क़ुरआने करीम की सूरत में मेरी रहनुमाई के लिये कितनी

अ़ज़मतो शान वाली किताब मुझे इ़नायत फ़रमाई है। इस बा बरकत किताब की ज़ियारत कर के ज़रा तसव्वुर तो कीजिये कि येह वोह पाकीज़ा किताब है जिस के अल्लाह पाक के कलाम होने में ज़र्रा बराबर भी शक नहीं, इस कलामे पाक का मक़ामो मरतबा इस क़दर बुलन्द है कि इस मुबारक किताब को छूने के लिये ताहिर (यानी पाक) होना ज़रूरी है, हर कसो नाकस इस मुक़द्दस किताब को हाथ नहीं लगा सकता बल्कि हुक्म है कि पहले वुज़ू कर के ज़ाहिरी तौर पर साफ़ सुथरा हो कर फिर कलामे पाक को छूए।

अब क़ुरआने करीम हाथ में ले कर ज़रा तसव्वुर कीजिये कि यक़ीनन येह वोह कलामे पाक है जिस का एक एक हर्फ़ हमारे प्यारे और आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से अदा हुवा है, मैं अपने रब का किस तरह शुक्र अदा करूं कि उस ने मुझे येह कलामे पाक न सिर्फ़ पढ़ने की इजाज़त अ़ता फ़रमाई है बल्कि पढ़ने, ज़ियारत करने, चूमने और छूने (Touch) पर मेरे लिये बहुत ज़ियादा अज्रो सवाब रखा है मेरे रब का मुझ पर कितना बड़ा एहसान है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَكَرَمِهٖ

कलामे पाक को चूमना कैसा ?

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुस्ह़फ़ (यानी क़ुरआन) शरीफ़ को ताज़ीमन सर और आंखों और सीने से लगाना और बोसा देना जाइज़ व मुस्तह़ब है कि वोह आज़म शआ़इर (यानी अल्लाह पाक की सब से बड़ी निशानियों में) से है और ताज़ीमे शआ़इर तक़्वल क़ुलूब (यानी दिलों की परहेज़गारी) से। (फ़तावा रज़विय्या, 22/356)

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रोज़ाना सुब्ह़ को मुस्ह़फ़ (यानी क़ुरआने करीम) को चूमते थे और फ़रमाते : येह मेरे रब का अ़हद और उस की किताब है। मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी क़ुरआने करीम को चूमते और चेहरे से मस (Touch) करते थे।

(در مختار، 9/634)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के मुबारक अन्दाज़ हमारे लिये रोल मॉडल (यानी बेहतरीन मिसाल) हैं। काश ! हम भी रोज़ाना कम अज़ कम एक मरतबा क़ुरआने करीम को हाथ में लें, चूमें और आंखों से लगाएं। अल्लाह पाक की रह़मत से क्या बई़द कि इस की बरकत से क़ियामत के दिन हमारे जिस्म के वोह आज़ा जो क़ुरआने करीम से मस हुए हों उन्हें जहन्नम की आग न छूए, जब उन आज़ा को आतिशे दोज़ख़ नहीं छूएगी तो फिर भला दूसरे आज़ा को कैसे जलाएगी ?

नारे दोज़ख़ में वोह न जाएगा　　बाग़े जन्नत ख़ुदा से पाएगा
जो ह़क़ीक़ी है आ़शिक़े क़ुरआं　　वाह क्या बात माहे क़ुरआं की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

क़ुरआनी असरार व रुमूज़

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक सूरत शुरूअ़ करता हूं और उस में ऐसी बात का मुशाहदा करता हूं कि सुब्ह़ तक खड़ा रहता हूं और वोह सूरत मुकम्मल नहीं होती। इसी त़रह़ बाज़ बुज़ुर्ग जब क़ुरआने करीम की कोई आयत पढ़ते और दिल उस की त़रफ़ मुतवज्जेह न होता तो उसे दोबारा पढ़ते।

(احیاء العلوم، 1/375)

ज़ालिम के लिये तीर और मज़लूम के लिये मरहम

करोड़ों शाफ़ेइयों के इमाम, ह़ज़रते मुहम्मद बिन इदरीस अल मारूफ़ इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़ुरआने करीम की हर आयत ज़ालिम के दिल में तीर और मज़लूम के दिल के लिये मरहम है। अ़र्ज़ की गई : वोह कैसे ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक पारह 16, सूरए मरयम में फ़रमाता है : ﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : "और आप का रब भूलने वाला नहीं है।" (پ16، مریم:64)

टूटे दिलों को ढारस बन्धाने वाली आयते करीमा

ऐ आ़शिक़ाने क़ुरआन ! तेरहवें पारे में सूरए यूसुफ़ की आयत नम्बर 86 में अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की कमाल आ़जिज़ी व इन्किसार का ज़िक्र है, चुनान्चे अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْۤ اِلَى اللّٰهِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याक़ूब ने कहा : मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूं।

बराहे करम इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ठहरिये, ज़रा ग़ौर कीजिये !!!

हो सकता है आप किसी मुश्किल में फंसे हों, किसी बीमारी का शिकार हों, किसी आफ़तो मुसीबत से दोचार हों, किसी आज़माइश की घड़ी से गुज़र रहे हों या क़र्ज़े के बोझ ने लोगों को मुंह दिखाने के क़ाबिल न छोड़ा हो, ऐसी किसी भी ह़ालत में ज़रा इस आयते मुबारका की तिलावत कर के थोड़ा सा रुकिये, ज़रा इस के तर्जमे को इ़तमीनान के साथ पढ़िये और तसव्वुर कीजिये कि इन मुबारक अल्फ़ाज़ के अन्दर किस क़दर कैफ़ो सुरूर और अल्लाह पाक पर तवक्कुल और एतिमाद का बयान है। इस आयते मुबारका के तर्जमे को तसव्वुर में रख कर तन्हाई में बारगाहे इलाही में रो रो कर अ़र्ज़ कीजिये : "**ऐ मेरे मौला ! मैं तो अपनी परेशानी और ग़म**

की फ़रियाद तुझ ही से करता हूं। ऐ मेरे मौला ! मैं किस ह़ाल में हूं तुझे सब इ़ल्म है।"

शायद तंगिये ह़ालात और इज़्तिराबी कैफ़िय्यात से बे साख़्ता आप की आंखों से टप टप आंसू गिर पड़ें, यक़ीन मानिये, येह क़बूलिय्यते दुआ़ के लम्ह़ात हैं, उस वक़्त रह़मतें नाज़िल हो रही हैं, इन्हें ग़नीमत जानें और अपने दिल की तमन्नाएं, जाइज़ दुआ़एं बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में पेश कीजिये ! वोह रह़ीमो करीम ज़ात हमारी त़रफ़ हर वक़्त हर आन मुतवज्जेह है, सिर्फ़ हमें तवज्जोह करनी है, बस फिर देखें कैसे आप की उल्झनें सुलझने लगती हैं, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

(ज़ौक़े नात, स. 18)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

बे सहारों, दुख दर्द के मारों के लिये ख़ुशख़बरी

अल्लाह पाक पारह 20 सूरतुन्नम्ल, आयत नम्बर 62 में इरशाद फ़रमाता है : ﴿ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : "या वोह बेहतर जो मजबूर की फ़रियाद सुनता है जब वोह उसे पुकारे और बुराई टाल देता है"

अल्लाह पाक के इस फ़रमाने आ़लीशान की तफ़्सीर में एक आ़रिफ़ (यानी अल्लाह पाक की पहचान रखने वाले बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) फ़रमाते हैं : यहां मजबूर व लाचार से मुराद वोह शख़्स है जो बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हो कर दुआ़ मांगे तो अपने और अल्लाह पाक के दरमियान अपनी किसी नेकी की त़रफ़ न देखे कि जिस के सबब वोह किसी शै (यानी इन्आ़म) का ह़क़दार बन सकता हो

बल्कि यूं अ़र्ज़ करे : ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे बग़ैर किसी बदले के वोह शै अ़ता फ़रमा। (قوت القلوب، 2/586) सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ फ़रमाते हैं कि दिल की बे क़रारी क़बूले दुआ़ के लिये इक्सीर (यानी बहुत असर रखने वाली) है।

बराहे करम इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ठहरिये, ज़रा ग़ौर कीजिये !!!

ज़रा ग़ौर कीजिये ! अल्लाह पाक इस आयते मुबारका में अपने तमाम बन्दों को किस क़दर अपने फ़ज़्लो करम से ढारस बन्धा रहा है, वोह दुआ़एं सब की सुनता है लेकिन मजबूर और बे सहारा की दुआ़ ख़ुसूसिय्यत के साथ सुनता है और न सिर्फ़ सुनता है बल्कि "उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा कर उस को परेशान करने वाली हर चीज़ को उस से दूर कर देता है।"

अकेले में मुकम्मल यक्सूई के साथ क़ुरआने करीम की ज़ियारत करते हुए येह आयते मुबारका या इस का तर्जमा पढ़िये और फिर एक एक कर के अपनी परेशानियों दुखों, ग़मों, अपने रुके हुए कामों और अपनी या अपने प्यारों की बीमारियों बल्कि ऐसे अमराज़ जिन के बारे में डॉक्टरों ने जवाब दे दिया हो, इन सब को ज़ेहन में लाइये और इस आयते मुबारका का विर्द करते हुए बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कीजिये :

ऐ मेरे मालिक ! मैं कमज़ोर, नातुवां, बे सहारा, ग़म का मारा, दर दर का ठुकराया तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हुवा हूं, तेरी बारगाहे बेकस पनाह में हर मुजरिम को पनाह मिल जाती है, मैं तेरे नबी का उम्मती, तेरा बन्दा तेरी बारगाह में अपनी मजबूरी लाया हूं, मुझे दर दर की ठोकरों से बचा ले, मेरे मौला मेरा तेरे सिवा कोई नहीं। तू ही मेरा सहारा है। फिर देखिये दिल को किस क़दर सुकून और राह़त ह़ासिल होती है। मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कितनी प्यारी बात कही है :

इस बे कसी में दिल को मेरे टेक लग गई शोहरा सुना जो रहमते बेकस नवाज़ का

(ज़ौक़े नात, स. 17)

कभी महरूम नहीं रहा

अल्लाह पाक के प्यारे नबी हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में नेक बेटे के लिये दुआ मांगी, उस मुबारक दुआ में निहायत आजिज़ी व इन्किसार का इज़हार करते हुए और रहमते इलाही पर बड़े नाज़ भरे अन्दाज़ से अर्ज़ करते हैं : ﴿وَلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآىِٕكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ मेरे रब ! मैं तुझे पुकार कर कभी महरूम नहीं रहा। (پ16، مریم:4)

बराहे करम इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ठहरिये, ज़रा ग़ौर कीजिये !!!

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक दुआओं को ज़रूर क़बूल फ़रमाता है बिल ख़ुसूस नेकों की और उन से भी बढ़ कर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की, मगर इन मुबारक अल्फ़ाज़ पर ग़ौर कीजिये कि अल्लाह पाक पर किस क़दर यक़ीने कामिल (यानी पूरे यक़ीन) और तवक्कुल का इज़्हार है, आज अगर हम भी अपनी आज़माइशों, आफ़तों, मुसीबतों में दर बदर की ठोकरें खाने और मुख़्तलिफ़ सिफ़ारिशों से अपने मसाइल हल कराने के बजाए सब से पहले अल्लाह पाक की बारगाह में पूरे यक़ीन के साथ गिर्या व ज़ारी कर के अर्ज़ करें, क्या बईद हवा में उठे हाथ अभी नीचे भी न आएं और हमारी ज़रूरिय्यात व हाजात को पूरा कर दिया जाए लेकिन इस के लिये यक़ीने कामिल शर्त है। अगर औलादे नरीना की तमन्ना हो तो बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ मांग कर निहायत आजिज़ी के साथ गिड़गिड़ाते हुए हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام के अदा किये हुए येह मुबारक अल्फ़ाज़ दोहराइये, हो सकता है आप पर भी करम का दरवाज़ा खुल जाए और

दिल की मुरादें पूरी हो जाएं। अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़र्ज़ करते हैं :

हाथ उठते ही बर आए हर मुद्दआ़ वोह दुआ़ओं में मौला असर चाहिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 513)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

जब ज़ालिम के ज़ुल्म से थक जाएं

ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी ज़ालिम के ज़ुल्मो सितम बरदाश्त कर के हिम्मत जवाब दे जाए तो हज़रते नूह नजियुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के अदा किये हुए मुबारक अल्फ़ाज़ जो इस आयते मुबारका में हैं उन्हें या उन के तर्जमे को पढ़ कर अपने दिल को ढारस दीजिये। पारह 27, सूरतुल क़मर, आयत नम्बर 10 में है : ﴿اَنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ۝۱۰﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : मैं मग़लूब हूं तो तू (मेरा) बदला ले।

बराहे करम इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ठहरिये, ज़रा ग़ौर कीजिये !!!

इस आयते मुबारका का तर्जमा ज़ेहन में रखते हुए बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कीजिये : या अल्लाह पाक ! मैं ज़ालिम के ज़ुल्मो सितम से थक चुका, मुझ में इस से मुक़ाबले की ताक़त नहीं, तू ही मेरा सब कुछ है, मौला मैं मग़लूब हूं, तू मेरा बदला ले।

मेरे मालिक व मौला ! नफ़्सो शैतान बड़े सरकश और ज़ालिम हैं, येह गुनाहों में मुब्तला कर के मुझे हलाकत के गहरे गढ़े में धकेलना चाहते हैं, मेरे अन्दर इन से लड़ाई की ताक़त नहीं, मौला तू मेरा बदला ले, मुझे हिम्मत दे, मुझे ताक़त दे कि मैं इन ज़ालिमों के चंगुल से निकल कर तेरी राह पे चल सकूं, तेरे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलूं, नेकी की दावत दूं, दावते इस्लामी के दीनी काम करूं, गुनाहों से बचूं, तेरे पाक घर

(यानी मसाजिद) आबाद करने के लिये सब को नमाज़ की दावत दूं, फ़ज्र के लिये भी जगाऊं, मौला नफ़्सो शैतान ग़ालिब आ गए, मैं मग़लूब हो गया, ऐ मेरे मौला ! तू मेरा बदला ले।

शैतान कुत्ता है

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِعَلَيْه अपनी किताब मिन्हाजुल आबिदीन में लिखते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने फ़रमाया : शैतान को भगाने का येही तरीक़ा है कि अल्लाह पाक की पनाह मांगते रहो क्यूंकि शैतान एक कुत्ता है जिसे अल्लाह पाक ने तुम पर मुसल्लत किया है, अगर तुम उस से लड़ने और इसे दूर भगाने में लग गए तो थक जाओगे और येह कुत्ता तुम से जीत कर तुम्हें काटेगा और ज़ख़्मी कर देगा लिहाज़ा इस कुत्ते के मालिक यानी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की तरफ़ रुजूअ़ करना ही ज़ियादा बेहतर है ताकि वोह उसे तुम से दूर कर दे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 46)

नफ़्सो शैतान हो गए ग़ालिब उन के चंगुल से तू छुड़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक के हवाले

येह सच है कि "तक़्दीर की गिरह तदबीर के नाख़ुन कभी नहीं खोल सकते", अल्लाह पाक ने जो कुछ हमारे मुक़द्दर में लिख दिया है वोह हर सूरत में हमें मिल कर रहेगा लेकिन अगर हम अल्लाह वालों के अन्दाज़ व वाक़िआ़त पढ़ें तो हैरान रह जाएं कि किस तरह उन्हों ने अपने तमाम मुआ़मलात सिपुर्दे इलाही किये हुए थे और उन के काम बनते ही चले गए, हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام तफ़वीज़ के आला मक़ाम पर पहुंचे हुए थे, आप عَلَيْهِ السَّلَام को शहीद करने

के लिये जब बदबख़्त नमरूद ने दुनिया की सब से बड़ी आग जलाई और आप को उस में डाला तो आग में पहुंचने से पहले फ़रिश्तों के सरदार हज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझ से मदद की ज़रूरत हो तो फ़रमाइये, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मदद की ज़रूरत है मगर आप से नहीं अपने रब से है, हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की फिर उसी की बारगाह में अ़र्ज़ कीजिये : आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर जो जवाब इरशाद फ़रमाया वोह सुनहरी हुरूफ़ से लिखने वाला है, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : मेरे हाल की मेरे रब को ख़बर है मुझे अ़र्ज़ करने की हाजत नहीं। (تفسیر کبیر، پ17، الانبیآء، تحت الآیۃ:68، 8/158)

जानता है मेरा रब्बे जलील आग में जाता है उस का ख़लील

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस काम में ख़तरे का ख़ौफ़ हो उस में येह इरादा करना कि अल्लाह पाक बेहतरी की हिफ़ाज़त फ़रमाए। इसे तफ़वीज़ कहते हैं और येह तसव्वुफ़ की एक ख़ास इस्तिलाह है, यक़ीनन बारगाहे इलाही में दुआ करना तक़दीर के ख़िलाफ़ नहीं है लेकिन हम तो अपने मुआमलात के बारे में सोचते सोचते Over thinking (यानी गहरी सोच) का शिकार हो जाते हैं, बेटी पैदा होने की ख़बर मिल जाए तो कोई नादान उसी वक़्त बच्ची की परवरिश, जहेज़ और शादी वग़ैरा के हवाले से सोच सोच कर जान हल्कान कर लेता और बेटी पैदा होने पर अफ़सोस का इज़हार करता है, जो कि ग़ैर मुस्लिमों का तरीक़ा है, हालांकि बेटी अल्लाह पाक की रहमत और बड़ी नेमत है जिस पर उस का शुक्र अदा करना चाहिये। न जाने इस तरह के रोज़ मर्रा ज़िन्दगी के कितने काम हैं जिन के बारे में बहुत पहले से सोचने लग जाते हैं और फिर ख़ुद ही नतीजा निकाल कर ग़मो अलम के आलम में गुम हो जाते हैं। ऐसे मौक़े पर अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे कलामे पाक की तरफ़ मुतवज्जेह हों और पारह 24, सूरतुल मोमिन, आयत नम्बर 44 से मदद

लेते हुए अपने आप से कहिये : (जैसा कि इरशाद होता है :) ﴿وَ اُفَوِّضُ اَمۡرِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ بَصِیۡرٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿۴۴﴾﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं अपने काम अल्लाह को सोंपता हूं, बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है।

बराहे करम इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ठहरिये, ज़रा ग़ौर कीजिये !!!

इतमीनाने क़ल्ब और यक्सूई के साथ तन्हाई में इस आयते करीमा के तर्जमे पर ग़ौर कर के एक एक लफ़्ज़ अदा कीजिये और उस लज़्ज़त को महसूस कीजिये जिस का इस आयते करीमा में बयान है, इस में मौजूद अल्फ़ाज़ किस क़दर हिम्मत अफ़्ज़ा और हौसला बढ़ाने वाले हैं। अगर مَعَاذَاللّٰہ ! घर में औलाद की पैदाइश पर इन की परवरिश के अख़राजात न होने की सूरत में नफ़्सो शैतान वस्वसे दिलाएं तो अपने आप से कहिये : मेरा रब रोज़ाना च्यूंटी को कन और हाथी को मन अ़ता फ़रमाता है, वोह भला मुझे कैसे महरूम रखेगा। वक़्ती आज़माइश है और येह वक़्त भी गुज़र जाएगा। एक व्हेल मछली की रोज़ाना की ग़िज़ा कई टन है लेकिन मेरा रब्बे करीम समुन्दरों की तह में अपनी उस मख़्लूक़ को भी रोज़ी अ़ता फ़रमा रहा है, वोह मुझे भी अ़ता फ़रमाएगा बल्कि दुनिया में पैदा होने वाले हर जानदार को जितना अ़र्सा दुनिया में ज़िन्दा रहना है उतनी रोज़ी उस ने उन के मुक़द्दर में लिख दी है और मिल कर ही रहेगी। लिहाज़ा मैं क्यूं बच्चों की पैदाइश या बेटी पैदा होने पर उस की शादी और जहेज़ वग़ैरा के मुआ़मलात पर ग़म करूं, जिस ने मां के पेट में इन्हें ग़िज़ा फ़राहम की है वोही इन्हें दुनिया में आने के बाद भी रोज़ी अ़ता फ़रमाएगा। एक शख़्स से पूछा गया : तुम कहां से खाते हो ? उस ने अपने मुंह की तरफ़ इशारा कर के कहा : जिस ने येह चक्की बनाई है वोह उसे पीसने के लिये ग़ल्ला भी देता है।

(المستطرف، 1/124)

हमारी बिगड़ी बनी उन के इख़्तियार में है सिपुर्द उन्हीं के हैं सब कारोबार हम भी हैं

रख मौला ते आस

ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तुम अपना मुआ़मला अल्लाह पाक के ह़वाले कर के उस से दुआ़ करोगे कि वोह तुम्हारे लिये वोह चीज़ मुक़र्रर करे जिस में तुम्हारी बेहतरी हो तो तुम्हें भलाई और बेहतरी ही नसीब होगी। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने जब येह अल्फ़ाज़ : ﴿وَ اُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : "और मैं अपने काम अल्लाह को सोंपता हूं, बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है।" अदा फ़रमाए तो उस के फ़ौरन बाद अगली आयते करीमा में मौजूद है कि अल्लाह पाक ने उन्हें फ़िरऔ़न की बुराइयों से बचा लिया और दुश्मनों पर उन की मदद फ़रमाई। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 246 मफ़हूमन)

इरादे जिन के पुख़्ता हों नज़र जिन की ख़ुदा पर हो
तलातुम ख़ेज़ मौजों से वोह घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा
पहले इसे पढ़िये	01
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	02
20 मरतबा दोहराया	04
लज़्ज़ते क़ुरआन से बे इख़्तियार रोते	04
कलामुल्लाह की लज़्ज़त	05
ऐ बन्दए ख़ुदा सोच ज़रा !	06
मुबारक किताब	07
कभी इस त़रह़ भी कीजिये	08
कलामे पाक को चूमना कैसा ?	09
क़ुरआनी असरार व रुमूज़	10
बराहे करम इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ठहरिये, ज़रा ग़ौर कीजिये !!!	11
बे सहारों, दुख दर्द के मारों के लिये ख़ुशख़बरी	12
कभी मह़रूम नहीं रहा	14
जब ज़ालिम के ज़ुल्म से थक जाएं	15
शैत़ान कुत्ता है	16
रख मौला ते आस	19

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

عید کی خوشیاں اور غُربا

ممکن ہو تو: اپنی مسجد کے امام، مؤذّن اور خادِم، غریب رشتے دار اور پڑوسی وغیرہ خصوصاً ضرورتمند ساداتِ کرام کی ایسی مالی ترکیب فرمادیجئے کہ یہ اور ان کے بچّے بھی عید کی خوشیوں میں شریک رہیں۔

ईद की ख़ुशियां और ग़ुरबा

मुम्किन हो तोः अपनी मस्जिद के इमाम, मुअज़्ज़िन और ख़ादिम, ग़रीब रिश्तेदार और पड़ोसी वग़ैरा ख़ुसूसन ज़रूरतमन्द सादाते किराम की ऐसी माली तरकीब फ़रमा दीजिये कि येह और इन के बच्चे भी ईद की ख़ुशियों में शरीक रहें।

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللّٰہ علی محمد

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570
Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372
Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200
Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099
www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com
For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025